"तुलसीदास की काव्य भाषा"

गोस्वामी तुलसीदास को ब्रजभाषा और अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार प्राप्त था तथा वे इन दोनों साहित्यिक भाषाओं में रचनाएँ की हैं। उन्होंने रामचरितमानस, रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल तथा रामाज्ञा प्रश्न आदि की रचना साहित्यिक अवधी में की जबकि विनय-पत्रिका, गीतावली, दोहावली, कवितावली, श्रीकृष्ण गीतावली तथा वैराग्य संदीपनी की रचना ब्रजभाषा में की है। तुलसीदास की भाषा भावप्रेषण में सक्षम है एवं प्रसंगानुकूल व पात्रानुकूल है। उनकी भाषा परिशुद्ध व्याकरण सम्मत एवं समास बहुल है। तुलसीदास की काव्य भाषा को अध्ययन की दृष्टि से पाँच वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

संस्कृत के तत्सम शब्द —

तुलसीदास संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। रामचरितमानस के काण्डों के प्रारम्भ में रचित संस्कृत श्लोक तथा स्तुतियाँ इस बात के प्रमाण हैं। तुलसीदास ने कुछ पद तो पूर्णतया संस्कृत में ही लिखा है, जिनमें संस्कृत के तत्सम शब्दों को अपनाया गया है। जैसे रामचरितमानस के मंगलाचरण का यह श्लोक —

"वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ॥"

इसके अतिरिक्त तुलसीदास ने कुछ पदों के निर्माण में हिन्दी-संस्कृत की मिश्रित पदावली का प्रयोग किया है, जिनमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की बहुलता है। उदाहरण स्वरूप 'विनय-पत्रिका' के इन पदों को देखा जा सकता है —

"श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरन भवभय दारुन।"

"जयति मरुदंजनामोद मन्दिर नतग्रीव-सुग्रीव दुःखैक बन्धो।"

तुलसीदास जी की अन्य रचनाओं में भी संस्कृत के तत्सम शब्दों की भरमार है, जैसे- वल्लभं, भद्रदाता ऽसमाकं, नौमि श्रीरामसौमित्रि, साकं, सुमिरामि नर भूपं रूपं, दुर्लभं, करूनाकरं, भुवनैक भर्ता आदि इस प्रकार से तुलसीदास ने अपने काव्य रचनाओं में संस्कृत के तत्सम शब्दों को अधिक मात्रा में अपनाया है।

पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के शब्द —

तुलसीदास ने अपने काव्य में वीर, रौद्र या भयानक रस के निरूपण में पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश के शब्दों का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग किया है। द्वित्व वर्णों की प्रधानता होने के कारण पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश आदि भाषाओं के शब्द वीर, रौद्र आदि रसों के लिए सहायक होते हैं। इसीलिए तुलसीदास ने उक्त रसों के निरूपण में इन शब्दों का प्रयोग किया है। भट्टा, घट्टा, चमकहिं, दमकहिं, कट्कट्ट, दपट्टहिं, खग्ग, अलुज्झि, जुज्झ, उर्वि, गुर्वि, पब्बै, बिद्दरनि, उच्छलित, मर्दि, लक्ख, लक्खन, तिक्खन, अच्छ, कुच्छ, विपच्छ, रघुपाति, दसरथ्थ, परब्बत आदि शब्दों का प्रयोग तुलसीदास ने किया है। इन शब्दों के कारण ही तुलसीदास के काव्य में नाद-सौन्दर्य के साथ-साथ ओजगुण एवं रौद्र तथा वीर रस की व्यंजना देखने को मिलती है।

विदेशज शब्द —

तुलसीदास ने भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त नित्य व्यवहार प्रयोग में आने वाले अनेक अरबी, फारसी, तुर्की आदि विदेशी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग अपने काव्य रचनाओं में किया है। जैसे— गरूर, गुमान, गुनी,

गरीब, साहेब, रहम, गरीब-निवाज, गरीबी, खसम, कलई, सीपर, सबील, जहान, कागज, बखशीश, कख, गरदन, शोर, हवाले, खलक, हल्क, कहरी, बहरी, बिरमानी, हबूब, फहम, हलाकी, मिसकीन आदि अनेक अरबी, फारसी, तुर्की के शब्दों का प्रयोग तुलसीदास ने अपने काव्य में किया है। कुछ विदेशी शब्दों में देशी प्रत्यय लगाकर भी तुलसीदास ने अपनी रचनाओं व्यवहृत किया है, जैसे- दगाई, मिसकीनता, अलायक, सरोकता, हलाकी आदि।

विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं के शब्द —

तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में विभिन्न प्रान्तों की भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया है। तुलसीदास के काव्य में भोजपुरी, बुन्देलखण्डी, राजस्थानी, बाँगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के शब्दों की प्रचुरता है। जैसे- दाद, नारि (गर्दन), म्हाको, मेला, सारयों, पूजि, ठोंकि-ठोंकि खये आदि राजस्थानी के। जून, लाधे (प्राप्त किया), मुकिये (छोड़िये), मोंगी (मौन) आदि शब्द गुजराती के। बैसा (बैन), पारा (सका), खराइ (निभाती) आदि शब्द मराठी के बाँगला के। पवाँरो, अवकलत. आदि शब्द मिल जाते हैं।

अन्य बोलियों के शब्द —

तुलसीदास की काव्य भाषा में वैसे तो ब्रजभाषा एवं अवधी के शब्दों की प्रधानता है लेकिन इनके अतिरिक्त हिन्दी की अन्य बोलियों के शब्द भी उन्होंने प्रयोग में लाये हैं, जैसे — सरल (सड़ा हुआ), दिहल (दिया), धापल (दौड़ा), सूतल (सोया), राउर, रावरी, तहबा, लोइ, लोई (लोग) आदि भोजपुरी के शब्द तथा देखो तपुकिया, तेरी, मेरी, तुम्हारा, हमारा,

शरण आया, सोर मचा, लीजिए, कीजिए, गई, देना आदि खड़ी बोली के शब्द एवं सुआ, बागत (धूमते) आदि बघेली तथा छत्तीसगढ़ी के शब्द।

अलंकार योजना —

भावों के उत्कर्ष के लिए गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काव्य में अलंकारों का प्रयोग किया है। अपनी अनुभूतियों को व्यक्त अभिव्यक्त करने के लिए तुलसीदास ने अलंकारों का सहज प्रयोग किया है। तुलसीदास के काव्य में प्रयुक्त कुछ अलंकारों का उदाहरण इस प्रकार है —

उपमा — "चीपर पात सरिस मन डोला।"

रूपक — "राम विरह सागर महं भरत मगन मन होत।"

विभावना — "बिनु पग चलइ सुनइ बिनु काना।
कर बिनु कर्म करइ विधि नाना॥"

उत्प्रेक्षा — "विप्र रूप धरि पवन सुत आइ गयउ जनु पोत।"

दृष्टान्त — "भरतहिं होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ।
कबहुं कि कांजी सीकरनि छीर सिन्धु बिनसाइ॥"

निदर्शना — "कहै रघुपति के चरित उदारा।
कहै मोरि मोरि निरत संसारा॥"

अपह्नुति — "मैं जु कहा रघुबीर कृपाला।
बन्धु न होइ मोर यह काला॥"

सादृश्यमूलक अलंकारों में तुलसीदास को सर्वाधिक प्रिय उत्प्रेक्षा अलंकार है। यद्यपि उपमा एवं रूपक का प्रयोग भी उन्होंने प्रचुर मात्रा में किया है। इतना ही नहीं रूपकों के तो वे ~~उस्ताद~~ सम्राट कहे जा सकते हैं। लम्बे-लम्बे सांगरूपकों की दृष्टि से उनका रामचरितमानस एक बेजोड़ रचना है। उदाहरण स्वरूप ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

"सुमति भूमि थल हृदय अगाधू।
वेद पुरान उदधि घन साधू॥
बरसहिं राम सुजस बर बारी।
मधुर मनोहर मंगलकारी॥"

छन्द योजना —

तुलसीदास ने रामचरितमानस में दोहा, चौपाई, सोरठा, सवैया, कवित्त आदि छन्दों का प्रयोग किया है। कवितावली की रचना कवित्त, सवैया शैली में की है तथा विनय-पत्रिका पद शैली एवं दोहावली दोहा छन्द में लिखी है। इसके अतिरिक्त तुलसीदास के काव्य में कुण्डलिया, बरवै, घनाक्षरी, तोमर, त्रिभंगी आदि छन्दों की भी प्रधानता है। इनका शब्द-चयन पाण्डित्यपूर्ण है। तुलसीदास ने अपने समय में प्रचलित सभी काव्य शैलियों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है।

बिम्ब योजना —

तुलसीदास ने बिम्ब योजना के द्वारा अपने काव्य को चित्रात्मक एवं लोकग्राही बनाने का सफल प्रयास किया है। विनय-पत्रिका के पदों को संगीत की विभिन्न राग-रागिनियों में गाया जा सकता है। तुलसीदास का सम्पूर्ण काव्य गेयता के गुण से सम्पन्न है। चौपाइयों को गाकर प्रस्तुत करने की अनेक शैलियाँ हैं जिनके कारण इनका माधुर्य और भी बढ़ जाता है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि तुलसीदास की काव्यभाषा में मार्मिकता, प्रभावोत्पादकता, स्वाभाविकता, उदात्तता एवं कलात्मकता विद्यमान है।